संचार तंत्र के सशक्तिकरण में हिंदी की भूमिका

अनिल कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक बीवाक ग्राफ़िक्स एंड एनीमेशन
(अकाल डिग्री कॉलेज फॉर वीमेन संगरूर)

प्रस्तावना: संचार के विषय में विद्वान थायर ने लिखा है कि पारस्परिक समझ, विश्वास व अच्छे मानवीय संबंध बनाने के लिए विचारों व सूचनाओं का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया संचार है। आज अगर कहें कि संचार तंत्र या माध्यम के बिना मानव का रहना बहुत ही मुश्किल हो गया है तो अतिश्योक्ति नहीं हो गाये कथन सत्य है। अपने विचारों और भावों को दूसरों तक पहुंचाने के लिए जितना जरुरी संचार माध्यमों का है उससे कहीं जरुरी भाषा का है। भाषा व्यक्ति-जाति-समाज की अभिव्यक्ति का साधन होती है। भाषा गंगा की धारा का चिरंतन प्रवाह है जिसमे मार्गस्थ अनेक नदी नाले मिलकर विलुप्त हो जाते हैं। कहीं इसकी धारा अजस्र निर्मल होती है तो कहीं मणिकर्णिका घाट के मुर्दों की दुर्गन्ध के कारण इसका जल कुछ दूर के लिए अपेय हो जाताहै। भाषा की आयु एक दिन की नहीं होती। अनेक संस्कृतियों-सभ्यताओं के प्रभाव की गंध इसमें इस प्रकार समाहित हो जाती है जिस प्रकार फूल-माला को गूँथने वाले कदली-सूत्र में पुष्पों की गंध स्वत: समाहित हो जाती है। गंध को सूत्र से पृथक करना दुस्साध्य (कभी-कभी असंभव) हो जाता है।

अमीर खुसरो ने बड़े गर्व के साथ कहा था:

चूमनतूतीयेहिन्दमअररास्तपुसह्न।
ज़ेमनहिन्दु पुर्स, तानाज़गोयम।।

(मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, मुझ से हिन्दी में पूछ। यदि मुझसे हिन्दी में पूछेगा तो नाज़ से बताऊंगा।)

भाषा का प्रयोग संचार माध्यमों में- विश्व में कुल 6500 भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा है। भारतीय संविधान में सिर्फ 22 भाषा को मान्यता प्राप्त है। लेकिन 2011 के आंकड़ों के अनुसार ऐसे लोग जो 10,000 से ज्यादा एक भाषा को बोलते हैं ऐसी 121 भाषाएं भारत में बोली और समझी जाती हैं। हिन्दी और अंग्रेजी केंद्र सरकार की अधिकारिक भाषा है इसलिए आपको सभी सरकारी काम हिन्दी और इंग्लिश भाषा में देखने को मिलते है। राष्ट्रीय गौरव हिंदी भाषा का संचार माध्यमों के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। सामाजिक सरोकार जनहित के मुद्दों को प्रभावी सकारात्मकता के साथ आमजन को सुलभ तरीके से पहुंचाने में आज भी हिंदी भाषी संचार माध्यमों में महत्वपूर्ण भूमिका कायम है।

पत्रकारिता और हिंदी भाषा- आधुनिक हिंदी साहित्य का दूसरा चरण द्विवेदी युग कहलाता है। इसकी समयावधि सन् 1900 से 1920 तक मानी जाती है। भारतेंदु युग के समाप्त होते ही हिंदी साहित्य ने फिर करवट ली। उसकी हंसी-दिल्लगी (चुटीलापन) बाल-सुलभ चंचलता और स्वच्छंदता का सम्मोहन धीरे-धीरे लुप्त होने लगे। उसका स्थान अनुशासनऋ गाम्भीर्य तथा तत्व-चिंतन लेने लगा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' का सम्पादन भार स्वीकार करते ही हिंदी साहित्य को एक नई दिशा की ओर मोड़ दिया। वे लंबे समय तक 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिंदी का परिष्कार करते रहे। उनकी अनथक कोशिशों से ही गद्य-पद्य दोनों में एक बनती हुई नई साहित्यिक भाषा खड़ी बोली प्रतिष्ठित हो सकी। खड़ीबोली के व्याकरण की रचना) भाषिक परिष्कार और काव्यगत संस्कार का सारा श्रेय आचार्य द्विवेदी और उनके समकालीन कवियों को जाता है। आचार्य द्विवेदी से पूर्व हिंदी में भाषा अराजकता थी। उसमें बंगला, उर्दू, मराठी, गुजराती, अवधी, ब्रज आदि देसी-विदेशी भाषाओं और बोलियों के शब्दों का अव्याकरणिक और अमानक प्रयोग प्रचुरता से हो रहा था। हिंदी का शब्द भंडार सीमित था। हिंदी वाले इसके लि, संस्कृत या उर्दू-फारसी की तरफ ही देखा करते थे। भारतीय भाषाओं के शब्दों के मनचाहे और अव्याकरणिक इस्तेमाल से हिंदी में भदेसपन झलकने लगा था। आचार्य द्विवेदी ने व्याकरण सम्मत भाषा लिखने-लिखाने का आंदोलन आरंभ किया। भाषा परिषकार के इस कार्य में प्रसिद्ध निबंधकार बालमुकुंद गुप्त जैसे कई साहित्यकार आचार्य द्विवेदी से टकरा। इस वाद-विवाद से भाषा सुधार-संबंधी सम्वाद ही आगे बढ़ा। हिन्दी समाचार माध्यमों में भाषा की चुनौती विषय पर राष्ट्रीय विमर्श में विद्वानों ने हिन्दी को विद्रूप करने के षड्यंत्र और उसके खतरों की ओर जब स्पष्ट संकेत किया तब मध्य प्रदेश के उक्त समाचार-पत्रों ने हिन्दी की अस्मिता के लिए

ISBN: 978-81-954645-0-0

उठकर खड़ा होने का यह संकल्प लिया। हिन्दी समाचार-पत्रों का यह संकल्प ऐतिहासिक और अनुकरणीय है। बड़े पत्रकारिता संस्थान जो लगभग कारोबारी समूहों में बदल चुके हैं। उन्हें भी राष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व के इस आंदोलन को स्वीकार करना चाहिए। यह हमारी पहचान से जुड़ा मुद्दा भी है।

रेडियों कार्यक्रमों में हिंदी भाषा : आकाशवाणी के उपमहानिदेशक कमलेश माथुर ने बताया कि प्रसार भारती का 80 प्रतिशत कार्य हिंदी में ही होता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्व स्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है। आकाशवाणी ने समाचार, विचार, शिक्षा, समाजिक सरोकारों, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। इस समय आकाशवाणी के 225 केंद्रों और 361 ट्रांसमीटरों के साथ-साथ लगभग 400 एफ एम और सामुदायिक रेडियो चैनल प्रसारण कर रहे हैं। इनमें से अधिकतर चैनल हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। रेडियो प्रसारण में हिंदी के महत्व को इसी प्रकरण से समझा जा सकता है कि जब मुंबई में एफएम स्टेशनों के लाइसेंस दिए गए तो पहले आधे स्टेशन अंग्रेज़ी प्रसारण के लिए निर्धारित थे किंतु कुछही महीनों में वे भी हिंदी में प्रसारण करने लगे क्योंकि अंग्रज़ी श्रोता बहुत कम थे। मनोरंजन के अलावा आकाशवाणी के समाचार, खेल कार्यक्रम, प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं का आंखों देखा हाल तथा किसानों, मजदूरों और बाल व महिला कार्यक्रमों ने हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने में बहुत बड़ा योग दियाहै और आज भी देरहेहैं। अब वही काम निज़ी एफ एम चैनल कर रहे हैं। एफएम चैनल हल्के-फुल्के कार्यक्रमों, वाद-संवाद और हास्य-प्रहसन के ज़रिये हिंदी का प्रसार कर रहे हैं।

टेलीविजन कार्यक्रमों में हिंदी भाषा: मीडिया का सबसे मुखर, प्रभावशाली और आकर्षक माध्यम टेलीविज़न माना जाता है। टेलीविज़न श्रव्य के साथ-साथ दृश्यभी दिखाता है इसलिए यह अधिक रोचक है। भारत में अपने आरंभ से लगभग 30 वर्ष तक टेलीविज़न की प्रगति धीमी रही किंतु वर्ष 1980 और 1990 के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के ज़रिये हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान किया। वर्ष 1990 के दशक में मनोरंजन और समाचार के निज़ी उपग्रह चैनलों के पदार्पण के उपरांत यह प्रक्रिया और तेज होगी। रेडियो की तरह टेलीविज़न ने भी मनोरंजन कार्यक्रमों में फ़िल्मों का भरपूर उपयोग किया और फ़ीचर फ़िल्मों, वृत्तचित्रों तथा फ़िल्मों गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे बढ़ाया। टेलीविज़न पर प्रसारित धारावाहिक ने दर्शकों में अपना विशेष स्थान बना लिया। सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर-घर में देखे जाने लगे। रामायण, महाभारत, हम लोग, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रसार के वाहक बने बल्कि राष्ट्रीय एकता के सूत्र बन गए। देखते-ही-देखते टीवी कार्यक्रमों के जुड़े लोग फ़िल्मी सितारों की तरह चर्चित और विख्यात हो गए। समूचे देश में टेलीविज़न कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बदौलत देश के अहिंदी भाषी लोग हिंदी समझने और बोलने लगे।

'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे कार्यक्रमों ने लगभग पूरे देश को बांधे रखा। हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रमों में पूर्वोत्तर राज्यो, जम्मू-कश्मीर, और दक्षिणी राज्यों के प्रतियोगियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इस तथ्य को दृढ़ता से उजागर किया कि हिंदी की पहुंच समूचे देश में है। विभिन्न चैनलों ने अलग-अलग आयु वर्गों के लोगों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के सीधे प्रसारणों से भी अनेक अहिंदी भाषी राज्यों के प्रतियोगियो ने हिंदी में गीतगाकर प्रथम और द्वित्तीय स्थान प्राप्त किए। इन कार्यक्रमों में पुरस्कार के चयन में श्रोताओं द्वारा मतदान करने के नियम ने इनकी पहुंच को और विस्तृत कर दिया। टेलीविज़न चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे तरह-तरह के लाइव-शो में भाग लेने वाले लोगों को देखकर लगता ही नहीं कि हिंदी कुछ ख़ास प्रदेशों की भाषा है। हिंदी फ़िल्मों की तरह टेलीविज़न के हिंदी कार्यक्रमों ने भी भौगोलिक, भाषा तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़ दी हैं। हिंदी समाचार भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखे-सुने जाते हैं। हालांकि इन दिनों हिंदी समाचार चैनल समाचारों के स्तरीय प्रसारण की बजाय अविश्वस्नीय और सनसनीखेज ख़बरें प्रसारित करने के लिए आलोचना झेल रहे हैं किंतु फिर भी टी आर पी के मामले में वे अंग्रेज़ी चैनलों से कहीं आगे हैं। इन आलोचनाओं के बावजूद हिंदी ख़बरिया चैनलों की संख्या लागातार बढ़ती जा रही है। जून 2009 में 22 नये चैनलों को प्रसारण की अनुमति मिली जिनमें से अधिकांश चैनल हिंदी के हैं और लगभग सभी ने ख़बरे प्रसारित करने की अनुमति मांगी है। इस समय देश से अपलिंक होने वाले चैनलों की संख्या 357 है जिनमें से 197 ख़बरिया चैनल हैं। इनमें आधे से अधिक चैनल हिंदी कार्यक्रम

ISBN: 978-81-954645-0-0

या समाचार प्रसारित करते हैं। विदेशों से अपलिंग होने वाले चैनलों की संख्या 60 है। इस संदर्भ में यह जानना दिलचस्प होगा कि स्टार, सोनी और ज़ी जैसे विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलोंनेजबभारतमें प्रसारण प्रारंभ किया तो उनकी योजना अंग्रेज़ी कार्यक्रम प्रसारित करने की थी, किंतु बहुत जल्दी उन्होने महसूस किया कि वे हिंदी कार्यक्रमों के जरिये ही इस देश में टिक सकते हैं और वे हिंदी चैनलों में परिवर्तित होते गए। समाचार प्रसारण में हिंदी के बढ़ते महत्व का ही प्रताप है कि रेडियो और टेलीविज़न की ख़बरों के लिए सभी विशेषज्ञ और नेता अपने साउंड बाइट, टूटी-फूटी और अंग्रेज़ी मिश्रित ही सही, हिंदी में ही देने की कोशिश करते हैं।

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स में हिंदी भाषा का प्रयोग: यह इंटरनेट के द्वारा वीडियो व अन्य मीडिया से संबंधित कंटेंट को दिखाता है। यह एक तरह का एप्प ही होता है। जिसमे टेलीविजन कंटेंट एव फिल्म दिखा जाती है। इसके लिए कस्टमर को इन ओटीटी प्लेट फॉर्म्स पर सब्सक्रिप्शन लेना पड़ता है। यदि आज का परिदृश्य देखा जाये तो सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म ही लोगों द्वारा अधिक देखा जा रहा है। इन माध्यमों में हिंदी का सक्रियता उतनी जितनी कि अंग्रेजी भाषा का है। फिल्म हो या फिर को सीरीज हिंदी में देखा जा रहा है। यदि भाषा अंग्रेजी है तो अब आप चाहे तो अपने अनुसार का चुनाव कर सकते है। अन्य भाषा की फिल्मों में हिंदी का सबटाइटल दिया जाने लगा है। एक सर्वे की अनुसार फिल्म और अन्य प्रोग्राम देखने वाले सबसे अधिक हिंदी भाषा के दर्शक है।

सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग : सोशल मीडिया में हिंदी का प्रयोग वर्तमान सदी इंटरनेट और वेब मीडिया की सदी बन गयी है। एक समय था जब मीडिया के केवल दो प्रकार प्रिंटमीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रचलित थे। धीरे धीरे जब इंटरनेट का आगमन हुआ तो सोशल मीडिया उसने अपने तरीके से समाज को प्रभावित करना शुरू किया। हम कह सकतेहै कि रेडिओ और टेलीविजन के बाद इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन से आयी सूचना क्रांति ने सोशल मीडिया को जन्म दिया है। विश्व में लगभग 200 से अधिक सोशल नेटवर्किंग साइट है जिनमे फेसबुक , ट्विटर , ऑरकुट , इंस्टाग्राम , व्हाट्सप्प , जैसीकि सोशल साइटहै। इनस भी साइट में विभिन्न भाषाओं में हिंदी भाषाने अपना वर्चस्व बना लिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग फेसबुक और ट्विटर पर सक्रीय भारतीयों की संख्या 100 करोड़ से अधिक है। स्मार्ट फोनों पर चलने वाली व्हाट्सप्प मैसेंजर सन्देश सेवा में तो धूम मचा रखी है। हिंदी के नजरिये से देखा जाये तो भारत में80 प्रतिशत सर्च क्वेरी यानी पूछताछ वौइस हिंदी के माध्यम से होती है। लागबहगहर साइट ने अपनी भाषा में हिंदी लिपि को लिखने का दर्जा दे दिया है , जिससे हर को अब हिंदी में अपना सन्देश लिख सकता है।

फिल्म में हिंदी भाषा का प्रयोग : हिन्दी को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने में हिन्दी सिनेमा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। यह एक ऐसे माध्यम के रूप में हमारे बीच है जो अपने आप में कलाओं और संस्कृतियों को समेटे हुए है। समय के साथ हिंदी सिनेमा की तस्वीर भी बदल रही है। आज फिल्मों को लेकर नए-नए प्रयोग ज्यादा हा रहे हैं। फिल्मों क विषय चयन सेलेकर संवाद लेखन और पटकथा तक पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव दिखने लगा है। हालांकि इस तरह के प्रयोग बॉलीवुड में पहले से ही होता आ रह है, लेकिन आजकल ये प्रयोग बढ़ गया है। सिनेमा के मुख्य किरदार के संवाद अब क्षेत्रीय बोली में लिखे जाते हैं, उदाहरण के लिए तन्नु वेडस मन्नु की मुख्य किरदार कंगना उर्फ कुसुम अपना परिचय देते हुए कहती है ' म्हारा नाम कुसुम सांगवानी से, जिला झझड़ 124507, फोन नं. दौंकोणा' दरअसल इस संवाद के जरिए हरियाणवी भाषा को भी व्यापक स्तर पर पहचान मिलतीहै। ऐसे ही बाजीराव मस्तानी में रणवीर सिंह उर्फ बाजीराव पेशवा के ज़रिए मराठी भाषा तो गैंग्स ऑफ वासेपुर में भोजपुरी, उड़ता पंजाब से पंजाबी, तोपान सिंह तोमर के जरिए ब्रजभाषा हिंदी के साथ मिश्रित हो लोगों तक पहुंची। फिल्मों के संवाद और विषय चयन के अलावा हिन्दी फिल्मों के गाने भी क्षेत्रीय भाषा और बोली की शब्दावलियों के इस्तेमाल से बनने लगे हैं। जहां हिन्दी सिनेमा में खड़ी बोली का इस्तेमाल किया जाता रहा है उदाहरण के तौर पर पियूष मिश्रा का षआरम्भ है प्रचंड, बोले मस्तकों के झुंड, आज ज़ंग की घड़ी की तुम गुहार दो" जैसे हिन्दी के गीत लिखे। वहीं सी हिन्दी सिनेमा में अब षजियाहो बिहार के लाला, जियातूहजारसाला" या मैं घणीवावली होगीजैसे क्षेत्रीय शब्दावली के साथ गीतों में नए-नए प्रयोग भी किए जा रहे है। फिल्म और साहित्य दोनों ही समाज का दर्पण माने जाते हैं। दर्पण वही दिखाता है जो सच हो। ऐसे में आज फिल्मकार जब फौजी से बागी बने पानसिंह तोमर पर फिल्म बनाते हैं तो इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि पानसिंह तोमर जिस पृष्ठभूमि से आता है वो अपनी बोलचाल में भी वहीं का लगे। इसलिए संवाद लेखक उस किरदार के लिए षहमा मां को बंदुक की बट्टतोमारोष जैसे संवाद लिखता है।

मोबाइल संचार में हिंदी भाषा का प्रयोग : यहाँ यदि मोबाइल और कंप्यूटरकी संचार क्रांति की चर्चा न की जाए तो बात अधूरी रह जाएगी। ये ऐसे माध्यम हैं जिन्होंने दुनिया को सचमुच मनुष्य की मुट्ठी में कर दिया है। सूचना, समाचार और संवाद प्रेषण के लिए इन्होंने हिंदी को विकल्प के रूप में विकसित करक संचार-तकनीक को तो समृद्ध किया ही है, हिंदीको भी समृद्धतर बनाया है। इसी प्रकार इंटरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र-पत्रिकाओं के -संस्करण तथा पूर्णत: ऑनलाइन पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर सर्वथान दुनिया के दरवाज़े खोज दिए हैं। आज हिंदी की अनेक पत्रिकाएँ इस रूप में विश्वभर में कहीं भी कभी भी सुलभ हैं तथा अब हर प्रकार की जानकारी इंटरनेट पर हिंदी में प्राप्त होने लगी है। इस तरह हिंदी भाषा ने 'बाज़ार' और 'कंप्यूटर' दोनों की भाषा क रूप में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर दिया है। भविष्य की विश्व भाषा की ये ही तो दो कसौटियाँ बता जाती रहीहैं!

निष्कर्ष : स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक हिंदी दुनिया में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी परंतु आज स्थिति यह है कि वह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनी है तथा यदि हिंदी जानने-समझने वाले हिंदीतर भाषी देशी-विदेशी हिंदी भाषा प्रयोक्ताओं को भी इसके साथ जोड़ लिया जाए तो हो सकता है कि हिंदी दुनिया की प्रथम सर्वाधिक व्यवहृत भाषा सिद्ध हो। हिंदी के इस वैश्विक विस्तार का बड़ा श्रेय भूमंडलीकरण और संचार माध्यमों के विस्तार को जाताहै। इसीके साथ यह भी स्मरणीय है कि प्रकाशन जगत में भी वैश्वीकरण के साथ जुड़ी नई तकनीक के कारण मूलभूत क्रांति संभव हो सकी है। विभिन्न आयु और रुचियों के पाठकों के लिए हिंदी में विविध प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है तथा मनोरंजन, ज्ञान, शिक्षा और परस्पर व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार हो रहा है।

संदर्भ-सूची

पुस्तकें

- भारतीय सिनेमा का सफरनामा, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार प्रकाशन
- हरियाणवी सिनेमा संदर्भ कोश, रोशन वर्मा, लक्ष्य प्रकाशन, पिंजौर पंचकुला
- MAED-03 शोध विधियां तथा सांख्यिकी, उत्तर-प्रदेश राजर्शि टण्डन विश्वविद्याल, इलाहबाद
- रिसर्च मैथोडॉलाजी, लक्ष्मी नारायण कोहली, वाई-के-पब्लिकेशन, आगरा

शोध प्रबन्ध, पत्र एवं आलेख

- Women's lead Roles in Blockbuster Hindi Movies (2013): A Content Analysis Dr. Bandana Pandey Professor] Guru Jambheshwar University of Science & Technology] Hisar] Haryana] India
- Aggarwal Research Scholar] Guru Jambheshwar University of Science & Technology] Hisar] Haryana]
- Nollywood: A Case Study of the Rising Nigerian Film Industry& Content & Production Elizabeth T-

वैब लिंक्स

- https://www.narakasapatna.org
- https://www.hindikunj.com/2015/08/journalism-and-languages.html
- http://cinemajagat.blogspot.in/2010/02/blog-post.html
- http://www.bbc.com/hindi/entertainment/story/2007/02/070204_regional_cinema.shtml

ISBN: 978-81-954645-0-0